

संगठन की मजबूती का आधार हैं बूथ अध्यक्ष: महेश शुक्ला

दैनिक बुद्ध का संदेश



डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। आगामी विधानसभा 2027 चुनाव की तैयारियों को धार देने और संगठन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई बूथ को और अधिक सक्रिय बनाने को लेकर से बुधवार को नगर क्षेत्र के राप्ती नदी तट के बगल स्थित मंगल भवन में भाजपा का विधानसभा स्तरीय बूथ अध्यक्ष सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में बूथ सशक्तिकरण, डिजिटल प्रशिक्षण अभियान और संगठन विस्तार को लेकर कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया गया। कार्यक्रम में 488 बूथ अध्यक्ष के सापेक्ष 481 बूथ अध्यक्ष उपस्थित रहें। मुख्य अतिथि भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य एवं पूर्व जिलाध्यक्ष संतकबीरनगर सेतवान राय ने कहा कि कार्यकर्ताओं का सामूहिक प्रयास ही भाजपा की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा कि जो बूथ वर्तमान में

सी श्रेणी में हैं, उन्हें बी श्रेणी में और बी श्रेणी के बूथों को ए श्रेणी में लाना संगठन का प्रमुख लक्ष्य है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी



और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कथन बूथ जीता तो चुनाव जीता का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता बूथ को मजबूत बनाने को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता बनाए। उन्होंने भाजपा के डिजिटल बूथ प्रशिक्षण अभियान को संगठन को तकनीक से जोड़ने वाला ऐतिहासिक अभियान बताते हुए इसे सफल बनाने में सभी



पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मोर्य

सक्रिय रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता जनता की समस्याओं के समाधान में सहयोग करें तथा पात्र लोगों तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि जब कार्यकर्ता सेवा और समर्पण की भावना से जनता के बीच कार्य करेगा, तब संगठन स्वतः मजबूत होगा और पार्टी की विजय का मार्ग भी प्रशस्त होगा। इस दौरान नरेंद्र मणि त्रिपाठी, शीतल सिंह, अशोक अग्रहरी, उदयपाल वर्मा, लवकुश ओझा, दशरथ चौधरी, चंद्र प्रकाश वर्मा, धर्मराज वर्मा, मधुसूदन अग्रहरी, अमरेंद्र त्रिपाठी, गणेश विश्वकर्मा, राजकुमार चौधरी, श्रवण चौधरी, रामू गौतम, लालजी शुक्ला, दिलीप पांडेय, शत्रुहन सोनी, अंकित श्रीवास्तव, संतोष पासवान, सुभाष विश्वकर्मा सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी, बूथ अध्यक्ष एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

यातायात नियमों के उलंघन पर 28 वाहनों पर हुई कार्रवाई

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर को कम करने के उद्देश्य से चलाए जा रहे जीरो

अभिषेक महाजन के निर्देश पर आयोजित अभियान अपर पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार प्रसाद के पर्यवेक्षण, क्षेत्राधिकारी शोहरतगढ़

की जानकारी दी गई। उन्हें हेलमेट एवं सीट बेल्ट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करने, निर्धारित गति सीमा का पालन

आह्वान किया गया। इसके बाद ग्राम नकथर के पास वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया। इस दौरान दोपहिया एवं



फेटलिटी डिस्ट्रिक्ट (थ्व) कार्यक्रम के तहत थाना शोहरतगढ़ की सीसी (क्रिटिकल कॉरिडोर) टीम ने बुधवार को जागरूकता अभियान चलाया। पुलिस अधीक्षक डॉ.

मयंक द्विवेदी के निर्देशन तथा प्रभारी निरीक्षक नवीन सिंह के नेतृत्व में संचालित किया गया। अभियान के दौरान शांति निकेतन इंटर कॉलेज, छतहरी में छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों

करने तथा शराब पीकर वाहन न चलाने के प्रति जागरूक किया गया। साथ ही विद्यार्थियों से अपने अभिभावकों एवं आसपास के लोगों को भी यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने का

उपनिरीक्षक हरेंद्र शरण शुक्ल, हेड कांस्टेबल शिवाकांत यादव, नागेंद्रपांडे, दिवाकर मिश्रा, अमय पांडे, जितेंद्र मिश्रा, विष्णु जायसवाल, विश्वनाथ पांडे, हरगोविंद साहू, मनोज यादव महामंत्री, धर्मेन्द्र यादव, प्रमोद हिंदू, राजेश गुप्ता, योगेश यादव, रामशरण मोर्य, अनुपमा सिंह दुबे, सुशीला केवट, सुषमा मिश्रा, शंभू वर्मा, मंगल चौरसिया, हरकेश सिंह, प्रिस पांडे, सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बूथ अध्यक्ष सम्मेलन का आयोजन

दैनिक बुद्ध का संदेश



विधान सभा बांसी: भारतीय जनता पार्टी द्वारा बांसी विधानसभा (304) में आज बुधवार को बूथ अध्यक्ष सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य संगठन को और अधिक मजबूत करना और बूथ सबसे मजबूत है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला प्रभारी महाराजगंज रामजियावन मोर्य जी उपस्थित रहें। इसके साथ ही, कार्यक्रम के संयोजक बांसी विधायक राजा जय

प्रताप सिंह जी रहे छ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राम जियावन मोर्य ने कहा कि मेरा बूथ सबसे मजबूत तभी होगा जब हम बूथ पर कार्य करेंगे बूथ पर कार्य करते हुए आगामी 2027 में विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाएंगे इसी तरह बांसी विधायक राजा जय प्रताप सिंह ने कहा कि हम सब को मिलकर 2027 चुनाव की तैयारी करना है हम सभी लोग चाहे हम हो या आप हो, भाजपा के कार्यकर्ता हैं हम आप सभी



कार्यकर्ताओं के बल पर चुनाव जीते हैं कार्यकर्ता पार्टी के रीढ़ की हड्डी होते हैं, आज भाजपा देश में सबसे बड़ी पार्टी है उन्होंने भाजपा के कार्यों को विस्तृत रूप से बताया सम्मेलन में आए हुए सभी लोगों का बांसी विधायक राजा जय प्रताप सिंह ने स्वागत और अभिनंदन किया कार्यक्रम का संचालन पूर्व जिला महामंत्री दिलीप चतुर्वेदी ने किया, इस दौरान छोटे राजा अभय प्रताप सिंह, रामकुमार कुंवर जी, राजेंद्र पांडे, विजय कान्त चतुर्वेदी,

कुंवर बारी, संजय श्रीवास्तव, शैलेंद्र दुबे, बृजेश पांडे, नागेंद्रपांडे, दिवाकर मिश्रा, अमय पांडे, जितेंद्र मिश्रा, विष्णु जायसवाल, विश्वनाथ पांडे, हरगोविंद साहू, मनोज यादव महामंत्री, धर्मेन्द्र यादव, प्रमोद हिंदू, राजेश गुप्ता, योगेश यादव, रामशरण मोर्य, अनुपमा सिंह दुबे, सुशीला केवट, सुषमा मिश्रा, शंभू वर्मा, मंगल चौरसिया, हरकेश सिंह, प्रिस पांडे, सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहेछ

हॉटस्पॉट पर साइनबोर्ड लगाकर रोके जाएंगे सड़क हादसे, यातायात पुलिस ने बढ़ाए सुरक्षा के इंतजाम

एसआई ट्रेफिक अजय यादव के नेतृत्व में जनपदभर में चलाया जा रहा सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

दैनिक बुद्ध का संदेश



सिद्धार्थनगर। जनपद में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने और वाहन चालकों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से यातायात पुलिस द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है। दुर्घटना की आशंका वाले संवेदनशील एवं दुर्घटना बाहुल्य स्थलों पर चेतावनी साइन बोर्ड लगाकर वाहन चालकों को सतर्क किया जा रहा है इसी क्रम में खेसरहा थाना क्षेत्र के दलदलापुर सहित विभिन्न प्रमुख मार्गों एवं दुर्घटना संभावित स्थानों पर यातायात पुलिस द्वारा चेतावनी साइन बोर्ड लगाए जा रहे हैं। इन बोर्डों के माध्यम से वाहन चालकों को गति नियंत्रित रखने, सावधानीपूर्वक वाहन चलाने और यातायात नियमों

का पालन करने के लिए जागरूक किया जा रहा है। एसआई ट्रेफिक अजय यादव के नेतृत्व में यातायात पुलिस की टीम जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा को लेकर लगातार जागरूकता अभियान चला रही है। दुर्घटना संभावित स्थानों की पहचान कर वहां चेतावनी बोर्ड लगाने के साथ ही लोगों को सुरक्षित यातायात के प्रति जागरूक किया जा रहा है, ताकि सड़क हादसों में कमी लाई जा सके। इस संबंध में एसआई ट्रेफिक अजय यादव ने बताया कि पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर के निर्देशन में सड़क सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए अभियान चलाया जा रहा है। जनपद में सड़क दुर्घटनाओं को कम



करना इस अभियान की प्रमुख प्राथमिकता है। दुर्घटना संभावित स्थानों पर चेतावनी साइन बोर्ड लगाए जा रहे हैं और वाहन चालकों को यातायात नियमों के पालन के प्रति जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने वाहन चालकों से अपील की कि वे निर्धारित गति सीमा का पालन करें, हेलमेट और सीट बेल्ट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करें तथा वाहन चलाते समय यातायात संकेतों और नियमों का विशेष ध्यान रखें। यातायात पुलिस का प्रयास है कि जागरूकता और सतर्कता के माध्यम से सड़क दुर्घटनाओं पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके और लोगों का सफर सुरक्षित बनाया जा सके।

इस संबंध में यातायात प्रभारी एसआई अजय यादव से वार्ता की गई। उन्होंने बताया कि पुलिस अधीक्षक अभिषेक महाजन के नेतृत्व में सड़क दुर्घटनाओं पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से लगातार यातायात जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत वाहन चालकों को यातायात नियमों का पालन करने, चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट लगाने, दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने तथा शराब पीकर वाहन न चलाने के लिए जागरूक किया जा रहा है। उन्होंने वाहन चालकों से सुरक्षित यातायात के लिए नियमों का पालन करने की अपील की।

राम जानकी मन्दिर परिसर में भरा पानी पूजापाठ कार्य ठप, जिम्मेदार मौन

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटवा/सिद्धार्थनगर। स्थानीय नगर पंचायत के वार्ड नम्बर 08 गुरु गोविंद सिंह नगर स्थित राम जानकी मन्दिर परिसर में पानी

है। बरसात होने के कारण मन्दिर परिसर पानी से पूरी तरह डूब गया और श्रद्धालुओं को पूजा बंद करना पड़ा। वार्ड के निवासियों

निकल गए। पहले से कोई व्यवस्था नहीं की गयी और अब बारिश होते ही पूरा मन्दिर परिसर तालाब बन गया है। यदि

कार्य के लिए लोगों के पास कहां समय है। वार्ड के निवासियों ने कहा कि सावन माह शुरू होने से पहले जिम्मेदार इसको नहीं सही



भर जाने से श्रद्धालुओं को पूजापाठ करने में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जबकि जिम्मेदार सब कुछ जानने के बाद भी मौन धारण किए हैं। जानकारी के अनुसार स्थानीय नगर पंचायत के वार्ड नम्बर 08 गुरु गोविंद सिंह नगर में पुराना राम जानकी मन्दिर है। जहां हर रोज श्रद्धालु पूजा पाठ करने आते

का कहना इसी महीने मे सावन शुरू होने वाला है ऐही हाल रहा तो पूजा पाठ कैसे किया जाएगा नगर पंचायत होने के बाद भी यह वार्ड विकास कार्य से कोसों दूर है। दुर्भाग्य की बात यह है कि यहां के अधिशासी अधिकारी चेयरमैन व सभासद से इस बारे में कई बार कहा गया लेकिन वह लोग टालमटोल करके



जिम्मेदार चाहें तो नहर की पट्टी के बगल से स्थाई या अस्थायी जल निकासी का रास्ता बना दें तो बरसात का पानी सीधा आगे निकल जाएगा। या मन्दिर परिसर में मिट्टी पाट दिया जाए। लेकिन जिम्मेदारों को इसे देखने के लिए समय नहीं मिला पा रहा है। वोट मांगना होता तो दस बार जरूर चक्कर लगाते। निःस्वार्थ सेवाभाव

किया तो हमारा भी समय आएगा देखा जाएगा विक्रम अजय सिंह, गिरीश चौधरी राजेश गिरी, राकेश गिरी, भोलावन, रामचंद्र मोर्य, विश्वनाथ, मनसा देवी, रेखा, कलावती, मायागिरी, शीला, प्रमावती, विद्यावती, लक्ष्मी आदि ने मन्दिर परिसर से जल निकासी की जिम्मेदारों से व्यवस्था करने की मांग की है।

कार्यालय : नगर पालिका परिषद जनपद- सिद्धार्थनगर

अल्पकालीन ई-प्रोक्योरमेंट निविदा सूचना

सर्वसम्बन्धित को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका परिषद, सिद्धार्थनगर में वित्तीय वर्ष 2025-26 में सेफ सिटी योजनान्तर्गत प्राप्त धनराशि से नगर पालिका सीमान्तर्गत कराये जाने वाले निर्माण कार्यों हेतु ई-निविदा प्रतिशत दर पर आमन्त्रित किया जाता है। निविदा प्रपत्र आन लाइन उपलब्ध हैं, जो आन लाइन <http://etender.up.nic.in> पर ही डाउनलोड व अपलोड किया जायेगा, जिसका विवरण निम्नवत् है-

A	ई-प्रोक्योरमेंट के माध्यम से निविदा प्रकाशित की तिथि	20/07/2026
B	वेबसाइट पर ऑनलाइन निविदा डाउनलोड की तिथि	20/07/2026 अपराह्न: 12:00 बजे से
C	ई-प्रोक्योरमेंट के माध्यम से निविदा डालने की अन्तिम तिथि व समय	10/08/2026 अपराह्न: 04:00 बजे तक।
D	ई-प्रोक्योरमेंट के माध्यम से तकनीकी निविदा खोलने की तिथि व समय	11/08/2026 प्रातः 11:00 बजे
E	ई-प्रोक्योरमेंट के माध्यम से वित्तीय निविदा खोलने की तिथि व समय	12/08/2026 प्रातः 11:00 बजे
F	ई-निविदा खोलने का स्थान	कार्यालय नगर पालिका परिषद, सिद्धार्थनगर

उक्त निर्माण कार्य से सम्बन्धित अधिक जानकारी <http://etender.up.nic.in> पर उपलब्ध है तथा उक्त निविदा के बारे में कार्यालय नगर पालिका परिषद, सिद्धार्थनगर नोटिस बोर्ड पर चस्पा निविदा सूचना से भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सम्पादकीय

इसके अलावा आपातकालीन इंतजामों के जरिये साफ–सफाई से जुड़ी सेवाएं निर्बाध रूप से जारी रहनी चाहिए। निस्संदेह, किसी भी तरह के विवाद के चलते आम लोगों की सेहत को दांव पर नहीं लगाया जा सकता। यह भी विडंबना ही है कि जब तक सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा जमा होना शुरू नहीं होता, तब तक अक्सर शहरों की सफाई को हल्के में ले लिया जाता है...

राम जी का खेत और राम जी की चिड़िया

सवाल तो कोई भी सड़क चलते कर सकता है। बहुत सारे सवाल हैं, पर जवाब जलेबी हो जाते हैं और उनका सिरा ढूंढ़ना मुश्किल होता है। असली कौन है? उसकी तो केवल परछाईं दिखती है, स्थूल काया नदारद। कल पता चला कि मोहल्ले के मंदिर से भगवान का मुकुट चोरी चला गया और फिर मिल गया। मोहल्ले वाले संतुष्ट हैं। सभी समझते हैं कि वह असली होगा। मगर चोरों ने चांदी की जगह गिलट का मुकुट पहना दिया। हेराफेरी हुई। लोग तो चेहरा देखते हैं, मुकुट पर कौन ध्यान देता है? पर मुकुट के दानदाता, यानी असली भक्त ने पहचान लिया। दरअसल, पहचानता वही है जिसकी नजर हमेशा अपने सामान पर बनी रहती है। बाकी लोगों की नजर तो चेहरा निहारती है। और क्या करे? साध्य तो चेहरा है, बाकी साधन। अब बताइए, क्योंकर कोई नकली चांदी चढ़ाएगा? पर सवाल तो सवाल होता है, भले ही एक परसेंट अहमियत रखता हो। बाकी नित्यानवे परसेंट के लिए तो सवाल की जगह ही नहीं है। सवाल करना आसान है, पर उसका जवाब बड़ा कठिन होता है। पेपर आउट पर सवाल हो या चंदा–चोरी के, सरकार कहां तक जवाब दे? और चोरी तो चौसठ कलाओं में एक मानी जाती है। इस कला में माहिर का तो सम्मान होना चाहिए। सवाल तो कोई भी सड़क चलते कर सकता है। बहुत सारे सवाल हैं, पर जवाब जलेबी हो जाते हैं और उनका सिरा ढूंढ़ना मुश्किल होता है। असली कौन है? उसकी तो केवल परछाईं दिखती है, स्थूल काया नदारद। टोपी वाला दोषी है, खहर वाला या रामनामी में लिपटा? छाया में काया नहीं दिखती। रुपरेखा जरूर नजर आती है। पर रुपरेखा के आधार पर किसी की कॉलर तो नहीं पकड़ी जा सकती। पर यहां तो लगता है, चोर–चोर मौसेरे भाई हैं या फूका भाई–भाई? भक्तों को तो पथर में भगवान नजर आते हैं, पर सेवादारों को भगवान में पत्थर दिखता है। इसलिए सरेआम माल इधर–उधर कर देते हैं। एक सेवादार का मानना है कि अगर सागर में से एक लोटा पानी निकाल भी लिया, तो सागर को क्या फर्क पड़ना है? दूसरे सेवादार का कहना है कि वह तो राम की चिड़िया है और खेत राम का। उसी खेत के दाने चुगे हैं उसने। सवाल पेट का है। पेट के लिए आदमी क्या नहीं करता! चुगता भी है, बीनता भी है और पिरोता भी है। पेट के सवाल पर भगवान भी मौन हो जाते हैं, क्योंकि पेट उन्हीं की देन है। इसलिए किसी को एतराज नहीं होना चाहिए। दूसरा कहता है, ‘हम तो राम की चिड़िया हैं, कौए, कबूतर, बगुले, तीतर तो नहीं।’ पेट के वास्ते सरकार भी कभी–कभी बांटा–बूटी करती है। कभी लड्डू बांटती है तो कभी रेवड़ियां। इसलिए बतौर भगवान के आशीर्वाद–स्वरूप मुट्ठीभर माल ले भी लिए, तो उस अक्षय भंडार का क्या होने वाला है?

बहरहाल, छात्रों और युवाओं ने इस प्रकरण में अब तक सहनशीलता का ही पस्चि़य दिया है। यह भी संभव है कि सरकार के अड़ियल रुख के चलते निकट भविष्य में यह आंदोलन समाप्त भी हो जाए। पर युवा पीढ़ी में जो पीड़ा और आक्रोश दिखाई दिया है, वह किसी भी उत्तरदारी सरकार के लिए चिंता की बात होनी चाहिए। इस बात को भी नहीं भुलाया जाना चाहिए कि कितनी भी कोशिश कर लें,...

यह भी समझना जरूरी है कि हमारा आज का युवा सिर्फ हंगामा खड़ा करने में विश्वास नहीं करता, वह सूरत बदलने के लिए बेचौन है। इससे पहले कि उसका आक्रोश हताशा में बदल जाए, कुछ नहीं, बहुत कुछ सकारात्मक करने की आवश्यकता है। सरकार कब जागेगी? वह मां अपनी तेरह–चौदह साल की बच्ची को लेकर राजधानी दिल्ली के ‘प्रदर्शन–स्थल’ जंतर–मंतर में आई थी। एक पत्रकार ने जिज्ञासा की तो उस मां ने कहा था, ‘मैं अपनी बेटी को एक वास्तविकता से परिचित कराने लाई हूंकुल उसे भी अपने अधिाकारों के लिए लड़ने की आवश्यकता पड़ेगी।’ वह मां अकेली नहीं थी, जो अपनी संतान के बारे में इस तरह सोच रही थी। और वह बच्ची भी अकेली नहीं थी, जो अपने भीतर संघर्ष का एक जज़्बा लेकर वहां पहुंची थी। उस दिन, जब सड़क से संसद तक पहुंचने की एक होड़–सी लगी थी युवाओं में, तो यह जज्बा अपने पूरे उफान पर था। हां, उस दिन वहां राजधानी दिल्ली के ही नहीं, देश के अलग–अलग हिस्सों से भी हजारों

‘कॉकरोच’ इकट्ठे हुए थे। ये ‘कॉकरोच’ पिछले लगभग एक माह से अधिक समय से अपने अधिकारों के लिए और अपने भविष्य की सुरक्षा के लिए जंतर–मंतर पर बैठकर संघर्ष कर रहे थे। इस शांतिपूर्ण संघर्ष में कुछ ऐसे भी थे, जिन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कारगर अस्त्रकृअनशन को अपना हथियार बनाया था। लड़ाख से आए सोमन वांगचुक का नेतृत्व मिला था इन युवाओं को। एक मांग थी इन सबकीकृदेश की शिक्षा–व्यवस्था पर सवालिया निशान लगाने वाली सरकार की नीतियों में बदलाव चाहते थे वे। देश का शिक्षामंत्री इन नीतियों का प्रतीक बना और देश के युवा यह मांग कर रहे थे कि वे स्थिति की जवाबदेही स्वीकार करें और अपने पद से इस्तीफा दें। पर देश की सरकार को यह स्वीकार नहीं था। ये युवा 6 जून से धरना दे रहे थे। हैरानी की बात यह है कि सरकार को न धरने की परवाह थी और न ही भूख



हड़ताल पर बैठे प्रदर्शनकारियों की। शायद सरकार यह मानकर चल रही थी कि वे प्रदर्शनकारी थक जाएंगे और आंदोलन ँगिरे–धीरे समाप्त हो जाएगा। यदि यही सरकार की सोच थी, तो वह गलत थी।

सही क्या था, यह सरकार और देश ने संसद के मानसून अधिवेशन के पहले दिन देखा। हजारों की संख्या में देश के छात्र–युवा सरकार को यह दिखाने के लिए एकत्र हुए थे कि ‘नीट’ जैसी परीक्षाओं में हुए घोटालों से वे अपने भविष्य को अंधकारमय पा रहे हैं। देखा जाए तो यह आंदोलन युवाओं के

कर्मियों व लोगों की सेहत–सुरक्षा जरूरी

यह हमारी व्यवस्था की विडंबना ही है कि सड़कों व सार्वजनिक स्थलों में पसरा कचरा हटाना हमारी प्राथमिकता नहीं बनता। यह कचरा केवल दिखने में ही बुरा नहीं लगता बल्कि कई तरह के रोगों को जन्म देकर सार्वजनिक संकट का कारक भी बन सकता है। दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि हमारे समाज में सबसे महत्वपूर्ण सफाई का काम करने वाला वर्ग आर्थिक व सम्मान की दृष्टि से सबसे ज्यादा उपेक्षित रहता है। कमोबेश पंजाब की सड़कों पर जमा कचरा यही संकट दर्शा रहा है। सफाई कर्मचारियों की हड़ताल के बीच घातक बीमारियां फैलने के खतरे को लेकर पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट की चेतावनी यह बताती है कि शहरी जीवन के लिये मूलभूत नागरिक सेवाएं कितनी महत्वपूर्ण हैं। खासकर मानसून के सीजन में यदि कचरा नहीं उठाया जाता तो स्थिति बेहद गंभीर हो जाती है। बारिश में इस कचरे के बहने से नालियां जाम हो जाती हैं। वहीं पानी के स्रोत भी दूषित हो सकते हैं। साथ ही मच्छर चूहे व कीट–पतंगे पनपने से बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। ऐसे में हाईकोर्ट का राज्यभर की नागरिक संस्थाओं से रिपोर्ट मांगना और सरकार की जवाबदेही तय करना वक्त की जरूरत भी है। इसमें दो राय नहीं हो सकती कि नगर निकायों के अधिकारियों को जरूरी सेवाओं, विशेषकर लोगों की सेहत से सीधे जुड़ी सेवाओं के लिये आपातकालीन योजनाएं बनानी ही चाहिए। निस्संदेह, इस संकट को महज कानून व व्यवस्था के नजरिये से ही नहीं देखा जा सकता। निर्विवाद रूप से हमारे समाज में सफाई कर्मचारियों की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका होती है, लेकिन इस अहम कार्य को हम अपेक्षित मान्यता नहीं देते। यह विडंबना ही है कि सफाई कर्मचारी लंबे समय से नौकरी की असुरक्षा, स्थायी होने में लगने वाली देरी, मिलने वाला कम वेतन और काम करने की खराब स्थितियों की शिकायत करते रहते हैं। शोचनीय स्थिति यह है तंत्र सफाई कर्मचारियों की मांगों को तब तक नजरअंदाज करता है, जब तक वे अपनी मांगों के समर्थन में सड़कों में नहीं उतर जाते। बहरहाल, इस बात से इनकार नहीं

किया जा सकता कि सफाई कर्मचारियों को उनका वाजिब हक मिलना चाहिए। लेकिन हड़ताल व स्वास्थ्य सेवाओं का ठप होना न तो लोगों के हित में है और न ही सफाईकर्मियों के हक में। भारत में हर रोज 1.7 लाख टन से ज्यादा ठोस कचरा विभिन्न नगरपालिकाओं के अंतर्गत पैदा होता है। लेकिन तीव्र गति से बढ़ते शहरीकरण के चलते नागरिक सेवाओं पर लगातार दबाव बढ़ रहा है। ऐसे में इस चुनौती के मुकाबले के लिये आधुनिक तकनीक के साथ प्रोफेशनल तरीके से ठोस कचरे का निस्तारण होना चाहिए। साथ ही जरूरी है कि पर्याप्त स्टाफ मिले, सफाई के आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये जाएं। इसके अलावा इस क्षेत्र में निरंतर निवेश बढ़ाया जाए। हमारे नीति–नियंताओं को सोचना चाहिए कि आपातकाल के समय की गई कोई भी कार्रवाई लंबी अवधि की योजना का विकल्प नहीं बन सकती। ऐसे में सरकार के अधिकारियों को तुरंत सफाई कर्मचारियों के प्रतिनिधियों से बातचीत करनी चाहिए। उनकी जायज मांगों को एक तय समय सीमा में हल करने की दिशा में अविलंब काम करना चाहिए। इसके अलावा आपातकालीन इंतजामों के जरिये साफ–सफाई से जुड़ी सेवाएं निर्बाध रूप से जारी रहनी चाहिए। निस्संदेह, किसी भी तरह के विवाद के चलते आम लोगों की सेहत को दांव पर नहीं लगाया जा सकता। यह भी विडंबना ही है कि जब तक सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा जमा होना शुरू नहीं होता, तब तक अक्सर शहरों की सफाई को हल्के में ले लिया जाता है। निश्चित रूप से हाल ही में पंजाब में पैदा हुए गतिरोध से हमें सबक लेना चाहिए। बल्कि इस चुनौती के बीच साफ–सफाई को एक जरूरी जन सेवा के तौर पर मान्यता देने का उपक्रम करना चाहिए। हमारा प्रयास हो कि हम शहरों की सफाई के लिये बेहतर नियोजन करें। इस क्षेत्र में निवेश को बढ़ाएं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सफाई के काम से जुड़े लोगों के कार्य का महत्व समझते हुए उन्हें पर्याप्त सम्मान दिया जाए। नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी से नहीं बच सकते।

मानवीय संवेदनाओं के धरातल पर बंटवारा

यह कानून हमें याद दिलाता है कि पस्विरा कोई कानूनी अनुबंध नहीं, बल्कि विश्वास और साझा दायित्वों का समूह है। संपत्ति के बंटवारे के समय श्‍न्यायश् केवल कागजी नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं के धरातल पर भी होना चाहिए। अगली बार जब आप अपने पुश्‍तैनी खेतों की मेड़ पर खड़े हों, तो याद रखिएगा कि वह जमीन मात्र मिट्टी का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि आपके पूरे पस्विरा का सांझा इतिहास है। यदि अब आपसे कोई कहे...

आज के दौर में जब संयुक्त परिवार सिमट रहे हैं और भौतिकवाद हावी हो रहा है, यह फैसला एक संजीवनी का कार्य करता है। यह कानून हमें याद दिलाता है कि परिवार कोई कानूनी अनुबंध नहीं, बल्कि विश्वास और साझा दायित्वों का समूह है। संपत्ति के बंटवारे के समय श्र्‍यायश् केवल कागजी नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं के धरातल पर भी होना चाहिए। क्या आपने कभी गहराई से सोचा है कि जो जमीन हमें हमारे पूर्वजों से विरासत में मिली है, वह वास्‍तव में किसकी है? क्या वह केवल कागजों पर दर्ज हमारी एक निजी संपत्ति है जिसे हम जब चाहें, जैसे चाहें बेच दें? या फिर, उस मिट्टी के कण–कण पर हमारे पूरे परिवार, हमारे भाई–बहनों और हमारी आने वाली पीढ़ियों का भी कोई नैतिक और कानूनी हक है? अक्‍सर गांवों, कस्‍बों और यहां तक कि शहरों में भी हमने देखा है कि जमीन के टुकड़े को लेकर घर के रिश्‍ते कैसे बिखर जाते हैं। किसी ने अपनी पुश्‍तैनी जमीन बिना परिवार से पूछे किसी बाहरी व्यक्ति को बेच दी, और बस इसी एक फैसले से सालों–साल चलने वाली कलह की नींव पड़ गई। भाई–भाई से अलग हो गया, संयुक्त परिवार टूट गए और जो जमीन कभी समृद्धि का प्रतीक थी, वह कड़वाहट और अदालती मुकदमों की जड़ बन गई। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने ‘महिंदर और अन्‍य बनाम पूरन सिंह’ (14 जुलाई, 2026) मामले में एक



यह फैसला केवल कानूनी किताबों की कोई सूखी शब्‍दावली नहीं है, बल्कि यह उन परिवारों की सामाजिक एकता को बचाने की कोशिश है, जिनकी जड़ें आज भी अपनी मिट्टी से जुड़ी हुई हैं। यह कानूनी संघर्ष निचली अदालतों से शुरू हुआ था। विवाद का मुख्‍य मुद्दा बहुत सरल लेकिन गहरा था रू क्या हिंदू उत्‍तराधिाकार अधिनियम, 1956 की धारा 22, खेती की जमीन पर भी लागू होती है? निचली अदालतों में एक लंबा तर्क चला कि खेती की जमीन आम संपत्तियों से अलग होती है। कुछ लोगों का कहना था कि यह आजीविका का साधन है, इसलिए इस पर मालिक का पूरा नियंत्रण होना चाहिए और उत्‍तराधिकार के सामान्‍य

कानून इस पर लागू नहीं होने चाहिए। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इन तमाम शंकाओं को एक झटके में खत्‍म कर दिया। अदालत ने स्पष्‍ट किया कि कानून की नजर में पुश्‍तैनी संपत्ति का स्‍वरूप नहीं बदलता। चाहे वह रहने का घर हो या खेती का खेत, यदि वह विरासत में मिली है, तो उसके प्रति कानूनी दायित्‍व समान है। कोर्ट ने यह संदेश दिया कि जमीन की प्रकृति बदल सकती है, लेकिन परिवार की जिम्मेदारी का स्‍वरूप नहीं। सरल शब्‍दों में कहें तो हिंदू उत्‍तराधिाकार अधिनियम की धारा 22 का मतलब हैदू ‘परिवार का पहला हक’। यह धारा कहती है कि यदि कोई वारिस विरासत में मिली संपत्ति का अपना हिस्‍सा बेचना चाहता है, तो वह सीधे किसी अनजान व्यक्ति या बाहरी खरीदार के पास नहीं जा सकता। इसे ‘प्रिम्पश्‍शन का अधिकार’ कहा जाता है, जिसके अंतर्गत बाहरी व्यक्ति को जमीन बेचने की स्‍वतंत्रता केवल तभी मिलती है जब परिवार का कोई भी सदस्‍य उसे खरीदने में रुचि न रखे या असमर्थ हो। यह कानूनी प्रावधान परिवार की पुश्‍तैनी विरासत को बाहरी हस्‍तक्षेप से बचाकर उसकी सामाजिक एकता और सुख्‍शा सुनिश्‍चित करने का एक शक्‍त माध्‍यम है। यूरोप के जर्मनी, ऑस्‍ट्रिया और स्‍विट्‍जरलैंड जैसे देशों में खेती की जमीन को ‘अविभाज्‍य इकाई’ मानकर कड़े कानूनों के जरिए उसे परिवार के भीतर ही सुरक्षित रखा जाता है, ताकि पुश्‍तैनी परंपराएं बनी रहें। इसके विपरीत,

अमेरिका में ब्‍यक्तिगत संपत्ति के अधिकारों को प्राथमिकता दी जाती है और जमीन बेचने की पूरी आजादी है, लेकिन वहां भी संपन्‍न परिवार अपनी विरासत को बाहरी हस्‍तक्षेप से बचाने के लिए ‘फैमिली ट्रस्‍ट’ और ‘कॉर्पोरेट स्ट्रक्चर्स’ जैसी कानूनी ब्‍यवस्‍थाओं का समझदारी से उपयोग करते हैं। भारत का कानून इन दोनों के बीच का एक संतुलन है। हम ब्‍यक्ति की आजादी का भी सम्‍मान करते हैं, लेकिन परिवार और समाज की एकता को भी बहुत महत्‍व देते हैं। यह भारतीय कानून की खूबी है कि वह हमें ब्‍यक्तिगत अधिकार तो देता है, लेकिन साथ ही हमें यह याद दिलाता है कि हम एक सामाजिक इकाई का हिस्‍सा हैं। यह हमें दुनिया के अन्‍य देशों के मुकाबले एक अधिक मानवीय चेहरा प्रदान करता है, जो रिश्‍तों को सिर्फ पैसे से ऊपर रखकर देखता है। इस तरह, यह कानून न केवल विवादों को जन्‍म लेने से रोकता है, बल्कि परिवार के भीतर आपसी संवाद और रिश्‍तों की मजबूती को भी अनिवार्य बनाता है। निरुसंदेह, जमीन का संरक्षण केवल संपत्ति का अधिकार नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को उनकी जड़ें से जोड़े रखने का एक पुनीत कर्त्तव्‍य है। यह कानून हमें याद दिलाता है कि कानून की असली सार्थकता तब सिद्ध होती है, जब वह न्‍याय प्रदान करने के साथ–साथ हमारी सामाजिक जड़ें को भी सींचता रहे। आज के दौर में जब संयुक्त परिवार सिमट रहे हैं और भौतिकवाद हावी हो रहा है, यह फैसला एक संजीवनी का कार्य करता है।

लोकतंत्र में सख्ती नहीं, उदार संवाद उपयोगी

भविष्य की सुरक्षा की लड़ाई है। सरकार ने इसे बहुत हल्‍के में लिया था। हो सकता है, कल सरकार की यह असंवेदनशीलता युवाओं को थका दे, पर यह सवाल अपनी जगह बना रहेगा कि जनतांत्रिक ब्‍यवस्‍था में कोई सरकार अपने ही युवाओं के प्रति इस तरह का रवैया कैसे अपना सकती है? हैरानी की बात यह भी है कि एक महीने से भी अधिक समय से चल रहे इस आंदोलन के प्रति हमारे मुख्‍यधारा के मीडिया ने भी लंबे समय तक उसे वह महत्‍व नहीं दिया, जो दिया जाना चाहिए था। हां, संसद तक पहुंचने की कूच वाले दिन हमारा मीडिया जरूर कुछ सक्रिय हुआ और तब देश को पता चला कि युवाओं का आक्रोश सचमुच उफान पर था। संयोग की बात है कि जब राजधानी दिल्ली में देश के युवा अपनी ब्‍य्‍था का प्रदर्शन कर रहे थे और न्‍याय की मांग कर रहे थे, तभी हमारे युवा वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष की खोज की कहानी में अपना योगदान दर्ज करवाया। प्रधानमंत्री ने इन युवा प्रतिभाओं को ब्‍धाई देते हुए देश की युवा शक्ति की उपलब्धियों और संभावनाओं का बखान किया। प्रश्‍नां के पात्र हैं हमारे ये युवा वैज्ञानिक, पर उन युवाओं पर राष्ट्रमानंत्री की निगाह क्यों नहीं गई, जो राष्‍ट्र ानी में संसद के दरवाजे तक पहुंचकर अपनी पीड़ा उन तक पहुंचाना चाहते थे? जब युवाओं की टोलियां संसद भवन तक पहुंचने की कोशिश कर रही थीं, तो एक तरफ संसद भवन के सारे दरवाजे बंद कर

दिए गए और दूसरी ओर लाठियों तथा आंस् गैस के गोलों से उन्हें रोकने की कोशिश की गई। मीडिया की सहायता से सारे देश ने राजधानी की सड़कों पर छात्रों–युवाओं पर पुलिस की मार के दृश्‍य देखे। लाठीचार्ज में सैकड़ों छात्र–युवा घायल हो गए। पुलिस की ओर से इस हंगामे में घायल पुलिसकर्मियों की संख्‍या भी बताई गई। नहीं होना चाहिए था यहकून छात्र घायल होने चाहिए थे, न पुलिस वाले। पर सवाल, जो पूछा जाना चाहिए, वह यह है कि यह स्थिति क्यों आई? स्थिति के इस स्‍तर तक पहुंचने के बाद सरकार की ओर से युवाओं को बातचीत के लिए बुलाया गया। यह काम पहले क्यों नहीं हो सकता था? जनतंत्र में लाठी नहीं, संवाद हथियार होता है। हैरानी की बात है कि इस सारे हंगामे के दौरान सरकार को न सड़कों पर नारे लगाते युवा दिखे और न ही भूख हड़ताल पर बैठे सोनम वांगचुक और उनकें युवा साथी। हैरानी तो इस बात की भी है कि सरकार की ओर से यह कहना जरूरी समझा गया कि

आंदोलनकारियों ने पहली बार बातचीत की पेशकश की है। क्या सरकार को इस बारे में पहल करने से किसी ने रोक रखा था? क्या सरकार का दायित्‍व नहीं बनता था कि वह आंदोलन कर रहे युवाओं तक पहुंचकर उनकी पीड़ा को समझने की कोशिश करती? क्या ऐसा करने से सरकार की इज्‍जत घट जाती? इस सारे प्रकरण में जो कुछ हुआ है, वह सरकार की असंवेदनशीलता को ही उजागर करता है। ‘नीट’ जैसी परीक्षाओं में हुई धांधली पहली बार हुई घटना नहीं है। अक्‍सर इस तरह के घोटाले सामने आते रहे हैं और अक्‍सर उनकी अनदेखी की जाती रही है।

सिद्धारनगर का सबसे बड़ा फ्रीटींग पब्लिकेशन हाउस...
फ्रीबीभीस्वयंईडिफिकेशनईकाई

बुद्ध पब्लिकेशन
ऑफसेट एण्ड प्रिन्टर्स

जी.एस.टी. थ्रू बुक/फार्म •• **कार्पोरल टैक्स्ट** •• **स्वतंत्र कारपी/फार्म/अवरी** •• **फर्पलेट** •• **काल्टर प्लेट** •• **काल्ट रिगिस्टर्ड कार्ड** •• **डैक्लर लेट पेंड** •• **बैंक फार्म**
लिकट-टीरो एजेंसी. बीनद नद्यकरपुर-सिद्धारनगर (3.P)
☎ 8795951917, 9453824459

Email: www.budhakasandesh.com
 Website: www.budhakasandesh.com



बॉक्स ऑफिस पर जन नायकन का तूफान! पहला दिन 100 करोड़, शाहरुख की पठान से आगे और रजनीकांत की कुली से पीछे



तमिल अभिनेता से तमिलनाडु के मुख्यमंत्री बने विजय की आखिरी फिल्म जन नायकन गुरुवार 23 जुलाई को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने जा रही है। पैन इंडिया फिल्म के तौर पर प्रदर्शित हो रही है यह फिल्म कई बार रिलीज टलने, लंबे कानूनी विवाद, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड (सीबीएफसी) से जुड़े विवादों और फिल्म के कुछ हिस्सों के लीक होने जैसी घटनाओं के बाद अब दर्शकों के सामने आने के लिए तैयार है। शुरुआत में यह फिल्म जनवरी में रिलीज होने वाली थी, लेकिन विभिन्न कारणों से इसकी रिलीज टालनी पड़ी। चूंकि यह विजय के अभिनय करियर की अंतिम फिल्म मानी जा रही है, इसलिए इसे लेकर दर्शकों के बीच जबरदस्त उत्साह बना हुआ है। रिलीज से चार दिन पहले शुरू हुई अग्रिम टिकट बुकिंग ने कई रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं, जिसके बाद फिल्म व्यापार से जुड़े कई विशेषज्ञ पहले दिन 100 करोड़ रुपये से अधिक के वैश्विक कारोबार का अनुमान लगा रहे हैं। निर्देशक एच. विनोथ की इस फिल्म में विजय आखिरी बार मुख्य भूमिका में दिखाई देंगे। यह फिल्म उनके अभिनय करियर का समापन मानी जा रही है और इसी कारण इसे लेकर प्रशंसकों में खास उत्साह देखने को मिल रहा है।

अग्रिम टिकट बुकिंग में शानदार प्रदर्शन: जन नायकन को भारतीय सिनेमा की सबसे बड़ी रिलीज में से एक माना जा रहा है। फिल्म के लिए पूरे भारत में लगभग 8,000 शो निर्धारित किए गए हैं, जिनमें से 3,500 से अधिक शो केवल तमिलनाडु में होंगे। सैकनिल्क की रिपोर्ट के अनुसार बुधवार सुबह तक फिल्म ने पहले दिन की अग्रिम टिकट बुकिंग से लगभग 15 करोड़ रुपये का सकल कारोबार कर लिया था। यदि ब्लॉक की गई सीटों को भी इसमें शामिल कर लिया जाए तो यह आंकड़ा 20 करोड़ रुपये से अधिक हो जाता है। पहले दिन के लिए अब तक लगभग 6.5 लाख टिकट बिक चुके हैं।

वैश्विक स्तर पर भी फिल्म की पहले सप्ताहांत की अग्रिम टिकट बुकिंग 30 करोड़ रुपये से अधिक पहुंच चुकी है। हालांकि, यहां यह ध्यान देने वाली बात है कि इस कारोबार का अधिकांश हिस्सा फिल्म के मूल तमिल संस्करण से आया है। तमिलनाडु के बाहर फिल्म को लेकर अपेक्षाकृत कम उत्साह दिखाई दे रहा है। खासकर उत्तर भारत के कई सिनेमाघरों में अग्रिम टिकट बुकिंग बेहद सीमित रही है। उत्तर भारत के सिनेमाघरों में कम रही अग्रिम टिकट बुकिंग के बावजूद मल्टीप्लेक्स सिनेमाघरों ने इसे अपने यहाँ किसी बड़ी बॉलीवुड फिल्म की तरह शो व स्क्रीन्स दिए हैं। हिन्दी के साथ-साथ उत्तर भारत की सभी मल्टीप्लेक्स चीन ने इसे इसके मूल संस्करण तमिल के लिए भी कई शोज आवंटित किए हैं। यह संख्या विजय की पहले प्रदर्शित हो चुकी फिल्मों, जिनमें उनकी ब्लॉकबस्टर रही फिल्म लियो भी शामिल है, से कहीं ज्यादा है। उत्तर भारत के सिनेमाघरों को उम्मीद है कि विजय की यह फिल्म हिन्दी भाषा में भी बेहतरीन कारोबार करने में सफल होगी।

बॉक्स ऑफिस पर पहले दिन कितनी होगी कमाई?: रिलीज में अभी एक दिन का समय बाकी है और उम्मीद की जा रही है कि बुधवार को अग्रिम टिकट बुकिंग की रफ्तार और तेज होगी। फिलहाल जन नायकन विजय की सबसे बड़ी हिट फिल्म लियो से पीछे चल रही है, जिसने केवल अग्रिम टिकट बुकिंग से ही 46 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। हालांकि, माना जा रहा है कि जन नायकन विजय की पिछली फिल्म द ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम (ट्राईज़्ज) के 29 करोड़ रुपये के अग्रिम बुकिंग रिकॉर्ड तक पहुंच सकती है।

फिल्म व्यापार विशेषज्ञों का अनुमान है कि जन नायकन भारत में पहले दिन लगभग 55 करोड़ रुपये का शुद्ध कारोबार कर सकती है। कुछ विशेषज्ञ यह आंकड़ा 60 करोड़ रुपये तक पहुंचने की संभावना भी जता रहे हैं। यदि ऐसा होता है तो फिल्म विजय की पिछली फिल्म द ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम के 44 करोड़ रुपये के पहले दिन के शुद्ध कारोबार को पीछे छोड़ देगी। हालांकि, यह विजय की ही फिल्म लियो के 65 करोड़ रुपये के शुरुआती रिकॉर्ड से पीछे रह सकती है। अनाधिकृत तौर पर बॉक्स ऑफिस का विश्लेषण करने वाले कुछ विश्लेषकों का अनुमान है कि जन नायकन विजय की लियो के 65 करोड़ रुपये के पहले दिन के आंकड़े को तोड़ने में सफल हो जाएगी और यह करीब 70 करोड़ के आंकड़े तक पहुंच सकती है।

विदेशों में भी शानदार शुरुआत की उम्मीद: विदेशी बाजारों में भी जन नायकन से बड़ी शुरुआत की उम्मीद की जा रही है। विशेष रूप से उत्तर अमेरिका, मध्य पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया में फिल्म को शानदार प्रतिक्रिया मिलने का अनुमान है। उम्मीद जताई जा रही है कि फिल्म पहले दिन अंतरराष्ट्रीय बाजार से 40 लाख अमेरिकी डॉलर से अधिक की कमाई कर सकती है। इसके साथ ही फिल्म का पहले दिन का वैश्विक सकल कारोबार 100 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर सकता है।

यदि ऐसा होता है तो जन नायकन पहले ही दिन 100 करोड़ रुपये का वैश्विक कारोबार करने वाली भारत की 19वीं और तमिल सिनेमा की तीसरी फिल्म बन जाएगी। हालांकि पहले दिन के सटीक आंकड़ों का अनुमान लगाना आसान नहीं होता, लेकिन कई व्यापार विशेषज्ञों का मानना है कि फिल्म 105 करोड़ रुपये से अधिक का वैश्विक कारोबार कर सकती है। ऐसा होने पर यह विजय की द ग्रेटेस्ट ऑफ ऑल टाइम (99 करोड़ रुपये), रजनीकांत की जेलर (91 करोड़ रुपये) और शाहरुख खान की पठान (104 करोड़ रुपये) जैसी फिल्मों की पहले दिन की वैश्विक कमाई को पीछे छोड़ सकती है। हालांकि, तमिल सिनेमा की सबसे बड़ी ओपनिंग का रिकॉर्ड फिलहाल रजनीकांत की कुली के नाम है, जिसने पहले दिन लगभग 153 करोड़ रुपये का वैश्विक कारोबार किया था। जन नायकन के इस रिकॉर्ड तक पहुंचने की संभावना फिलहाल कम मानी जा रही है।

जन नायकन के बारे में: एच. विनोथ के निर्देशन में बनी जन नायकन विजय की अभिनय करियर की अंतिम फिल्म है। इस फिल्म की शूटिंग के दौरान ही उन्होंने पूरी तरह से राजनीति में कदम रखने की घोषणा कर दी थी। यह फिल्म पहले जनवरी में रिलीज होने वाली थी, लेकिन केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड से प्रमाणपत्र नहीं मिलने के कारण इसकी रिलीज टाल दी गई थी। इसी दौरान विजय की पार्टी टीवीके ने तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज की और विजय ने राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।

फिल्म में विजय के साथ पूजा हेगड़े, बॉबी देओल, ममिता बैजू, गौतम वासुदेव मेनन, प्रकाश राज और नारायण जैसे कलाकार अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म का संगीत अनिरुद्ध रविचंद्र ने दिया है, जबकि छायांकन सत्यन सूर्यन और संपादन प्रदीप ई. राघव ने किया है।

मेरी आवाज का गलत... अजय देवगन की चौहान के मेकर्स पर भड़के जीशान अय्यूब



बॉलीवुड एक्टर अजय देवगन की आने वाली फिल्म चौहान रिलीज से पहले ही विवादों में फंस गई है। जब से इस फिल्म का टीजर बाहर आया है, तब से यह लगातार चर्चा में बना हुआ है। सबसे पहले चौहान कम्युनिटी ने आरोप लगाया कि फिल्म में उनके नाम का सही तरीके से इस्तेमाल नहीं किया गया है। इसके तुरंत बाद एक और नया पंगा शुरू हो गया। टीजर की शुरुआत में एक्टर मोहम्मद जीशान अय्यूब की आवाज सुनाई दी थी, जिस पर खुद जीशान ने काफी नाराजगी जताई है। अब उन्होंने खुद सामने आकर बताया है कि मेकर्स ने उनकी आवाज का गलत फायदा कैसे उठाया।

जीशान अय्यूब ने टीजर पर क्या कहा?: अजय देवगन की फिल्म के टीजर में अपनी आवाज यूज होने पर जीशान अय्यूब ने अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया। उन्होंने लिखा कि कुछ हफ्ते पहले एक फिल्म का टीजर आया था, जिसमें मेरी आवाज की एक लाइन थी। मैं यह बात पूरी तरह साफ कर देना चाहता हूँ कि मैं इस फिल्म का हिस्सा बिल्कुल नहीं हूँ और न ही मेरा इससे कोई लेना-देना है।

उन्होंने आगे बताया कि कुछ महीनों पहले मुझसे बिना कोई पूरी बात बताए सिर्फ एक लाइन डब करने के लिए कहा गया था। मैंने भी मेकर्स को पर्सनली जानने की वजह से बिना कोई सवाल पूछे मदद के तौर पर वो डबिंग कर दी थी। लेकिन जैसे ही टीजर रिलीज हुआ, मुझे समझ आया कि मेरी आवाज का गलत यूज किया गया है।

मेकर्स को हटानी पड़ी जीशान की आवाज: टीजर देखने के बाद जीशान ने तुरंत मेकर्स से अपनी आवाज हटाने के लिए कहा। उनकी सख्त आपत्ति के बाद मेकर्स ने 15 दिन पहले ही टीजर से उनकी आवाज को हटा दिया है। जीशान ने साफ कहा कि एक आर्टिस्ट के नाते वह कभी भी ऐसे किसी भी प्रोजेक्ट से नहीं जुड़ेंगे जो गलत तरीके से पेश किया जा रहा हो। इस तरह उन्होंने इस पूरे विवाद पर अपना स्टैंड साफ कर दिया है।

कब रिलीज होगी चौहान?: इतने सारे विवादों के बावजूद फैंस में इस फिल्म को लेकर काफी उत्सुकता बनी हुई है। अजय देवगन स्टारर यह फिल्म अगले साल यानी 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

नागराज वासुकी की अनन्य भक्ति से प्रसन्न हुए भगवान शिव, गले में धारण कर दिया सम्मान



भगवान शिव का रूप जितना ज्यादा रहस्यमयी है, उतना ही आकर्षक भी है। भगवान शिव अपने शरीर में भस्म, जटाओं में गंगा, माथे पर चंद्रमा और गले में नाग धारण करते हैं। भगवान शिव के इन सभी चीजों को धारण करने के पीछे अलग-अलग मान्यताएं हैं। असल में महादेव न सिर्फ मनुष्यों बल्कि अन्य जीवों पर भी अपनी कृपा और आशीर्वाद बनाए रखते हैं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि भगवान शिव अपने गले में नाग को धारण करते हैं। भगवान शिव एक ऐसे देवता हैं, जो समाज की बहिष्कृत चीजों को अपने साथ जोड़ते हैं। सांप को भगवान शिव ने अपने गले में धारण कर उसको सम्मान दिया। श्मशान की भस्म को अपने तन का लिबास बना लिया। कैलाश पर्वत को महादेव ने अपना घर बना लिया। तो आइए जानते हैं भगवान शिव ने अपने गले में सांप क्यों धारण किया है। शिवजी ने क्यों धारण किया सांप: धार्मिक कथाओं के मुताबिक नागराज वासुकी भगवान शंकर के परम भक्त थे। वह हमेशा भगवान शिव की पूजा-उपासना में लीन रहते थे। धार्मिक शास्त्रों के मुताबिक समुद्र मंथन के समय नागराज वासुकी ने रस्सी का किया था। जिससे सागर को मथा गया था। नागराज वासुकी की भक्ति से प्रसन्न होकर महादेव ने उनको नागलोक का राजा बना दिया। साथ ही भगवान शिव ने अपने गले में आभूषण की तरह लिपेटे रहने का वरदान दिया।

क्या मिलता है संकेत: भगवान शिव के विषैले सांप को अपने गले में धारण करना इस ओर भी संकेत देता है कि अगर दुर्जन भी अच्छे कर्म करें, तो ईश्वर उसको जरूर स्वीकार करते हैं। ऐसे में व्यक्ति को सिर्फ अच्छे कर्म करना चाहिए, चाहे उनका स्वभाव कैसा भी हो।

यहां भी मिलता है उल्लेख: धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक समुद्र मंथन के अलावा एक अन्य स्थान पर भी वासुकी नाग का वर्णन मिलता है। जब भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय वासुदेव कंस की जेल से उनको गोकुल लेकर जा रहे थे। तब यमुना में एक भयंकर तूफान आया। ऐसे में नागराज वासुकी ने भगवान श्रीकृष्ण और वासुदेव को सुरक्षित यमुना पार कराने में सहायता की थी।



मुंबई फिल्म द इंडिया स्टोरी के निर्माताओं ने फिल्म का एक नया और प्रभावशाली पोस्टर जारी किया है, जो देश के सबसे गंभीर जनस्वास्थ्य मुद्दों में से एक कीटनाशकों के अत्यधिक इस्तेमाल वाली खेती पर ध्यान केंद्रित करता है। काजल अग्रवाल और श्रेयस तलपड़े अभिनीत यह नया पोस्टर फिल्म की दमदार कहानी की झलक देने के साथ-साथ कृषि में बढ़ते कीटनाशकों के इस्तेमाल से जुड़े उन खतरों को भी सामने लाता है, जो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को चुपचाप प्रभावित कर रहे हैं।

नया पोस्टर बेहद प्रभावशाली विजुअल्स के साथ फिल्म के मूल संदेश को सामने रखता है। यह दर्शाता है कि हमारी थाली तक पहुंचने वाला भोजन किन छिपे हुए खतरों को अपने साथ ला सकता है। पोस्टर का गंभीर और

सोचने पर मजबूर करने वाला अंदाज फिल्म को लेकर उत्सुकता और बढ़ाता है। काजल अग्रवाल और श्रेयस तलपड़े इस कहानी के केंद्र में हैं, जो पीढ़ियों से जुड़ी एक अहम समस्या पर जागरूकता फैलाने का प्रयास करती है।

फिल्म के संदेश पर बात करते हुए काजल अग्रवाल ने कहा, द इंडिया स्टोरी ऐसी फिल्म है, जो हर घर तक पहुंचने वाला एक महत्वपूर्ण संदेश देती है। इस प्रोजेक्ट ने मुझे इसलिए आकर्षित किया, क्योंकि यह एक ऐसे विषय को उठाने का साहस करता है, जो हमारी रोजमर्रा की जिंदगी को सीधे प्रभावित करता है, लेकिन अक्सर हमारी नजरों से ओझल रहता है। मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म लोगों को अपने भोजन और उससे जुड़े विकल्पों के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित करेगी।

वहीं श्रेयस तलपड़े ने कहा, यह कहानी सिर्फ खेती की पद्धतियों की नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य और भविष्य की भी है। नया पोस्टर उसी गंभीरता और तात्कालिकता को दर्शाता है, जिसे हम इस फिल्म के जरिए सामने लाना चाहते हैं। हम ऐसे प्रोजेक्ट का हिस्सा बनना चाहते थे, जो समाज में सार्थक चर्चा शुरू करे और मुझे विश्वास है कि द इंडिया स्टोरी लोगों में इस विषय को लेकर जागरूकता पैदा करेगी।

द इंडिया स्टोरी पहले ही कीटनाशक खेती और उसके मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों जैसे संवेदनशील विषय को उठाने के कारण चर्चा में है। फिल्म यह दिखाने का प्रयास करती है कि किस तरह हानिकारक कृषि पद्धतियां वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित कर सकती हैं। साथ ही यह दर्शकों को यह सोचने के लिए प्रेरित करती है कि आखिर उनकी थाली तक पहुंचने वाला भोजन कितना सुरक्षित है।

अपनी प्रभावशाली कहानी के माध्यम से फिल्म खाद्य सुरक्षा और जनस्वास्थ्य जैसे अहम मुद्दों पर सार्थक संवाद शुरू करने का प्रयास करती है। जी स्टूडियोज और एमआईजी प्रोडक्शन एंड स्टूडियोज के सहयोग से प्रस्तुत द इंडिया स्टोरी का निर्देशन चेतन डी.के. ने किया है, जबकि इसकी कहानी और निर्माण सागर बी. शिंदे ने किया है। फिल्म 24 जुलाई 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में हिंदी, तेलुगु और तमिल भाषाओं में रिलीज होगी।

फिल्म के सह-निर्माताओं में स्वाति विनायक सैदाने, अनीता जाधव, विनायक सैदाने, कल्पेश शाह, देवयानी खोराटे और प्रेम जोशी शामिल हैं। तकनीकी टीम में सिनेमैटोग्राफर निशांत भागवत, संगीतकार मंगेश धाकड़े, एडिटर आशीष म्हात्रे, गीतकार शकील आजमी और साउंड डिजाइनर अनमोल भावे शामिल हैं। अपने प्रासंगिक विषय और सशक्त संदेश के साथ द इंडिया स्टोरी रिलीज से पहले लगातार चर्चा बटोर रही है।

भयंकर मारपीट के बाद फिर से चीन—फिलीपींस ने मचाया बवाल, राजदूतों को किया तलब!

दक्षिण चीन सागर में एक बार फिर चीन और फिलीपींस आमने—सामने हैं। लेकिन इस बार मामला सिर्फ समुद्र में जहाजों की भिड़ंत तक सीमित नहीं रहा। दोनों देशों के सुरक्षा बलों के बीच हुई झड़प अब कूटनीतिक टकराव में बदल चुकी है। हालात ऐसे बन गए हैं कि चीन और फिलीपींस ने एक दूसरे के राजदूतों को तलब कर कड़ा विरोध दर्ज कराया है। फिलीपींस का आरोप है कि चीन के तटरक्षक बल ने उसके नौसैनिक पर हमला किया। जबकि चीन कह रहा है कि पूरी घटना की शुरुआत फिलीपींस ने की। वहीं इस पूरे बवाल के बाद अमेरिका भी खुलकर फिलीपींस के समर्थन में उतर आया है। ऐसे में सवाल है कि आखिर दक्षिण चीन सागर में हुआ क्या? क्यों बार—बार यही इलाका चीन और फिलीपींस के बीच टकराव की वजह बन रहा है? क्या यह विवाद अब और भी खतरनाक मोड़ की ओर

बढ़ रहा है?



दरअसल दक्षिण चीन सागर में चीन और फिलीपींस के बीच लंबे समय से चला आ रहा विवाद एक बार फिर खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। सेकंड थॉमस शॉल के पास दोनों देशों के सुरक्षा बलों के बीच हुई झड़प के बाद बीजिंग और मनीला ने एक दूसरे के राजदूतों को तलब कर औपचारिक विरोध दर्ज कराया है। यह घटनाक्रम दिखाता है कि समुद्र में शुरु हुआ विवाद

अब सीधे कूटनीतिक टकराव में

को पूरी तरह खारिज करते हुए कहा कि उसके जवानों ने केवल कानून के मुताबिक कार्रवाई की और असली उकसावा फिलीपींस की ओर से हुआ। चीन तटरक्षक बल का दावा है कि फिलीपींस के जहाज स्‍ज—57 से निकली दो रबर नौकाएं तेज रफ्तार से उसकी गश्ती नौका के करीब पहुंची और खतरनाक तरीके से टकरा गईं। चीन का कहना है कि फिलीपींस के जवानों ने चप्‍पुओं और झंडों से हमला करने की कोशिश की। जिसके बाद उसके कर्मियों ने जवाबी कार्रवाई की। बीजिंग ने फिलीपींस पर तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर पेश करने और अंतरराष्‍ट्रीय स्‍तर पर चीन की छवि खराब करने का आरोप लगाया। वहीं फिलीपींस के सशस्‍त्र बल यानी एएफपी ने चीन के इन दावों को झू्ठा और भ्रामक बताया।

फिलीपींस ने सवाल उठाया कि चीन तटरक्षक बल की रबर नौका बीआरपी सिरा माद्रे के इतने करीब आखिर पहुंची ही क्यों? फिलीपींस का कहना है कि यह इलाका उसके विशेष आर्थिक क्षेत्र का हिस्‍सा है और चीन की मौजूदगी अवैध थी। फिलीपींस के मुताबिक उसकी नौकाओं को केवल चीनी जहाज को क्षेत्र छोड़ने की चेतावनी देने के लिए भेजा गया था ना कि टकराव शुरु करने के लिए। फिलीपींस का आरोप है कि चीन ने बार—बार क्षेत्र छोड़ने की चेतावनी को नजरअंदाज किया और फिर उसके सैनिक पर हमला किया। फिलीपींस के मुताबिक फिलीपीनी सैनिकों ने पूरे घटनाक्रम के दौरान संयम बर्ता और केवल आत्‍मरक्षा में जवाब दिया। फिलीपींस ने चीन को साफ तौर पर कहा कि पेशेवर रवय को कमजोरी नहीं समझा जाना चाहिए। फिलीपींस ने चीन पर दुष्‍प्रचार फैलाने का भी आरोप लगाया।

डोनाल्ड ट्रंप का बड़ा ऐलान, इंपोर्ट जेनेरिक दवाओं पर लगेगा 200 प्रतिशत टैरिफ, यूएस में बढ़ेगा मैनुफैक्चरिंग

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इंपोर्ट की जाने वाली जेनेरिक दवाओं के लिए एक नई टैरिफ पॉलिसी लागू की है। इस पॉलिसी में ड्यूटी (टैक्स) को धीरे—धीरे बढ़ाने की योजना है, ताकि दवा बनाने का काम वापस अमेरिका में शुरु हो सके। इस योजना के तहत, इंपोर्ट की जाने वाली जेनेरिक दवाओं पर अगले दो साल तक कोई टैरिफ नहीं लगेगा, लेकिन 2028 से इन पर भारी ड्यूटी लगाई जाएगी। अपने दृ्ध सोशल प्लेटफॉर्म पर इस फैसले की घोषणा करते हुए ट्रंप ने कहा कि इस पॉलिसी का मकसद

दवा कंपनियों को विदेश में प्रोडक्शन पर निर्भर रहने के बजाय अमेरिका में ही मैनुफैक्चरिंग यूनिट्स लगाने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह प्रस्‍ताव धारे लू मैन्‍युफैक्चरिंग को मजबूत करने और इंपोर्ट की जाने वाली दवाओं पर निर्भरता कम करने की उनकी बड़ी रणनीति का एक नया कदम है।

टैरिफ योजना कैसे काम करेगी: ट्रम्‍प की घोषणा के



अनुसार, आयातित जेनेरिक दवाओं पर 1 अगस्‍त, 2026 से दो साल की अवधि के लिए शून्य प्रतिशत टैरिफ लागू रहेगा।

इस संक्रमणकालीन अवधि के समाप्‍त होने के बाद, टैरिफ एक

वर्ष के लिए 100 प्रतिशत तक बढ़ जाएगा और उसके बाद 200 प्रतिशत तक बढ़ जाएगा। ट्रंप ने लिखा अगस्‍त, 2026 से, संयुक्‍त राज्‍य अमेरिका में लाई जाने वाली सभी जेनेरिक दवाओं पर दो साल की अवधि के लिए शून्य प्रतिशत टैरिफ लागू रहेगा, जिसके बाद टैरिफ एक वर्ष की अवधि के लिए 100: तक बढ़ जाएगा और उसके बाद 200: तक बढ़ जाएगा।

ट्रंप का कहना है कि इस कदम का मकसद दवा बनाने का काम वापस अमेरिका लाना

नेस्ले इंडिया का पहली तिमाही का शुद्ध लाभ 48.26 प्रतिशत बढ़कर 958.68 करोड़ रुपये हुआ

नयी दिल्ली, 22 जुलाई दैनिक उपभोग की वस्तुएं बनाने वाली प्रमुख कंपनी नेस्ले इंडिया का चालू वित्त वर्ष 2026—27 की पहली तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 48.26 प्रतिशत बढ़कर 958.68 करोड़ रुपये हो गया। वित्त वर्ष 2025—26 की पहली (अप्रैल—जून) तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध लाभ 646.59 करोड़ रुपये था। कंपनी ने बुधवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में उत्पादों की बिक्री से नेस्ले इंडिया का राजस्व 25.4 प्रतिशत

बढ़कर 6,363.27 करोड़ रुपये हो गया, जो एक वर्ष पहले की वाली प्रमुख कंपनी नेस्ले इंडिया का चालू वित्त वर्ष 2026—27 की पहली तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 48.26 प्रतिशत बढ़कर 958.68 करोड़ रुपये हो गया। वित्त वर्ष 2025—26 की पहली (अप्रैल—जून) तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध

लाभ 646.59 करोड़ रुपये था। कंपनी ने बुधवार को शेयर बाजार को दी सूचना में बताया कि चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में उत्पादों की बिक्री से नेस्ले इंडिया का राजस्व 25.4 प्रतिशत



समान अवधि में 5,073.96 करोड़ रुपये था। नेस्ले इंडिया के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक मनीष तिवारी ने कहा, “हमने मात्रा वृद्धि के दम पर बिक्री में 25.4 प्रतिशत वृद्धि के साथ मजबूत

आय 25.5 प्रतिशत बढ़कर 6,400.65 करोड़ रुपये हो गई जो एक वर्ष पहले की समान अवधि में 5,100.33 करोड़ रुपये थी।

कंपनी का कुल खर्च 20.71 प्रतिशत बढ़कर 5,070.03 करोड़

बालेन शाह का बड़ा यू—टर्न : नेपाल के पीएम अब भारत और चीन के दूतों से करेंगे अलग—अलग मुलाकात

बीजिंग—समर्थक या दिल्ली—समर्थक माना जाता रहा है। शाह इस साल मार्च में प्र्धानमंत्री बने। वे र्शजेन—जीर (ळमद—) समर्थित उस आंदोलन के दम पर सत्ता में आए, जिसने केपी ओली के नेतृत्व वाली पिछली सरकार को हटा दिया था। हालांकि, तब से शाह ने विदेशी राजनयिकों से अलग—अलग मिलने से इनकार करके स्थापित राजनयिक परंपराओं से हटकर काम किया है। इस रुख के कारण प्रधानमंत्री ने भारत के विदेश सचिव विक्रम मिश्री, चीन के वाणिज्य उप—मंत्री और कम्युनिस्ट पार्टी के नेता यान डोंग, और अमेरिका के असिस्टेंट सेक्रेटरी ऑफ स्टेट समीर पॉल कपूर और अमेरिकी विशेष दूत सर्जियो गोर के साथ बैठक करने के अनुरोधों को ठुकरा दिया है। द काठमांडू पोस्ट के अनुसार, शाह ने इसके बजाय इस साल अप्रैल आर मई में काठमांडू स्थित राजदूतों के साथ संयुक्त बैठकें कीं। इस नियम का एकमात्र अपवाद एशियाई विकास बैंक के अध्यक्ष मासातो कांडा के साथ उनकी बैठक थी, जो जुलाई की शुरुआत में नेपाल की तीन दिवसीय यात्रा पर आए थे। बालेन शाह ने विदेशी दूतों के साथ आमने—सामने की बैठकें न करने का जो नियम खुद बनाया है, उसकी नेपाल में राजनयिकों,

आईसीसी वनडे रैंकिंग: रोहित शर्मा और शुभमन गिल ने लगाई छलांग, कोहली से घटा फासला!

इंग्लैंड के बल्लेबाज जो रूट ICC मेन्स ODI प्लेयर रैंकिंग में टॉप 10 में वापस आ गए हैं, जबकि बेन डकेट टॉप 20 में शामिल हो गए हैं। उन्होंने इंग्लैंड को 2018 के बाद भारत के खिलाफ पहली मेन्स ODI सीरीज जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई। रूट, जिनकी



76. 99 और 74 रनों की नाबाद पारियों ने तीन मैचों की सीरीज में इंग्लैंड की जीत में अहम भूमिका निभाई, चार पायदान ऊपर चढ़कर आठवें स्थान पर पहुंच गए हैं। वे 2020 के बाद पहली बार टॉप 10 में लौटे हैं। आईसीसी की मीडिया रिलीज के अनुसार, लॉर्ड्स में शानदार 141 रन बनाने के बाद डकेट 11 पायदान ऊपर चढ़कर संयुक्त रूप से 19वें स्थान पर पहुंच गए हैंय यह इस मशहूर मैदान पर पुरुषों के वनडे मैच में किसी खिलाड़ी का सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर है। लॉर्ड्स में भारत के ओपनर रोहित शर्मा की शानदार 138 रनों की पारी ने उन्हें विराट कोहली के साथ रैंटिंग पॉइंट्स का अंतर घटाकर सिर्फ

नौ पॉइंट तक लाने में मदद की है। दोनों खिलाड़ी तीसरे और

चौथे स्थान पर बने हुए हैं, जबकि कप्तान शुभमन गिल दूसरे स्थान पर हैं और न्यूजीलैंड के टॉप—रैंक वाले डेरिल मिशेल (802 रेटिंग पॉइंट्स) से सिर्फ एक पॉइंट पीछे हैं। कार्डिफ में दूसरे वनडे में 66 रनों की पारी खेलने के बाद श्रेयस अय्यर दो स्थान ऊपर चढ़कर 13वें नंबर पर आ गए हैं। वेस्टइंडीज के अल्जारी जोसेफ और भारत के अक्षर पटेल ने बॉलिंग रैंकिंग में 10—10 स्थान की बढ़त हासिल की है और वे क्रमश: 26वें और 32वें स्थान पर पहुंच गए हैं, जबकि ऑलराउंडर सैम करन ने लॉर्ड्स में 49 रन देकर चार विकेट लिए, जिससे उन्हें 10 स्थान ऊपर चढ़कर 70वें नंबर पर आने में मदद

मिली। रिलीज के अनुसार, न्यूजीलैंड के लेपट—आर्म स्पिनर मिशेल सैंटनर और वेस्टइंडीज के गुडाकेश मोती ने भी ताजा अपडेट में काफी सुधार किया हैय इस अपडेट में उनकी वनडे सीरीज के चौथे मैच तक के प्रदर्शन को ध्यान में रखा गया है। न्यूजीलैंड की तीसरे और चौथे वनडे में जीत के दौरान सैंटनर ने 15 रन देकर 2 और 36 रन देकर 2 विकेट लिए, जिससे वे सातवें से चौथे स्थान पर पहुंच गए। वहीं, चौथे मैच में 49 रन देकर 5 विकेट लेने के कारण मोटी सात स्थान ऊपर चढ़कर संयुक्त रूप से नौवें स्थान पर आ गए हैं। माइकल ब्रेसवेल 14 स्थान ऊपर चढ़कर 29वें स्थान पर पहुंच गए हैं और दो स्थान के फायदे के साथ ऑलराउंडर्स की सूची में तीसरे स्थान पर हैं। आईसीसी मेन्स T20I प्लेयर रैंकिंग में, जिम्बाब्वे के खडिलाफ बांग्लादेश की 2—1 से सीरीज जीत के दौरान सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी बनने के बाद तंजिद हसन ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 20वीं रैंकिंग हासिल की है।

युवा हॉकी5 एशियाई चैम्पियनशिप: भारतीय सब जूनियर टीम ने पाकिस्तान और ओमान को हराया

मस्‍कट, 22 जुलाई भारतीय सब जूनियर लड़कों की टीम ने एफआईएच युवा हॉकी5 एशियाई चोम्पियनशिप में पाकिस्तान और



ओमान को हराकर जीत का सिलसिला जारी रखा। केतन कुशवाहा की कप्तानी में भारत ने ओमान को 14 . 0 से हराया जिसमें कप्तान ने चार गोल किये और आशीष तानी पूर्ति ने हैट्रिक लगाई। राहुल यादव और शाहरुख अली ने दो दो , प्रहलाद राजभर, करण गौतम और रोमित पाल ने एक एक गोल दागा। पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने 7 . 4 से जीत दर्ज की जिसमें करण गौतम ने तीन गोल किये। राहुल यादव, प्रहलाद राजभर, कप्तान कुशवाहा, रोमित पाल ने एक एक गोल किये। पाकिस्तान के लिये असलम मुहम्मद फरहान और आदिल ने एक जबकि उस्मान मुहम्मद ने दो गोल किये। भारतीय सब जूनियर लड़कियों ने चीन से 2 . 2 से झूँ खेला और उजबेकिस्तान को 16 . 0 से हराया। चीन के लिये चेन गि और जियाशिन गुओ ने गोल किये जबकि भारत के लिये नौशीन नाज ने दो गोल दागे। उजबेकिस्तान के खिलाफ नौशीन नाज ने चार, संदीपा कुमारी और कप्तान स्वीटी कुजूर ने तीन तीन, दिया और पुष्पा ने दो दो जबकि किरण इक्का और नीलम टोप्पो ने एक एक गोल दागे। यह टूर्नामेंट पहले एफआईएच हॉकी 5 विश्व कप का क्वालीफायर भी है।

चेन्नई ग्रैंड मास्टर्स में बड़ा उलटफेर, एम. प्रणेश ने विश्व चैंपियन डी. गुकेश को फिर दी मात

ग्रैंडमास्‍टर एम. प्रणेश ने विश्‍व चैंपियन डी. गुकेश को



लगातार दूसरी बार शिकस्त देकर चेन्नई ग्रैंड मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट के छठे दौर में बड़ा उलटफेर किया तो वहीं, ग्रैंडमास्‍टर निहाल सरीन ने हमवतन अर्जुन एरिगैसी को पराजित किया। टूर्नामेंट में अब एक और दौर का मुकाबला बचा है ऐसे में एरिगैसी की हार का सबसे बड़ा फायदा फ्रांस के ग्रैंडमास्‍टर अलीरेजा फिरोजा को मिला। फिरोजा छठे दौर में ग्रैंडमास्‍टर नोदिरबेक अब्‍दुसत्‍तोरोव के खिलाफ मुकाबला झूँ खेलाने के बाद चार अंकों के साथ अकेले शीर्ष पर पहुंच गए हैं। एरिगैसी और अब्‍दुसत्‍तोरोव एक समान 3.5 अंकों के साथ संयुक्‍त दूसरे स्थान पर हैं। मुकाबले के दौरान एक समय ऐसा लगा कि गुकेश अपनी पहली जीत दर्ज कर लेंगे, लेकिन प्रणेश ने उनकी गलती का फायदा उठाकर 39 चालों में मुकाबला अपने नाम कर लिया। एरिगैसी को संयुक्‍त बढ़त बनाए रखने के लिए सरीन के खिलाफ केवल झूँ की जरूरत थी। यह मुकाबला लंबे समय तक बराबरी का दिखा, लेकिन निहाल ने एक शानदार चाल के बाद बाजी पूरी तरह पलट दी। एरिगैसी को 60 चालों के बाद हार स्वीकार करनी पड़ी।